इकाई 24 रत्न–विज्ञान

इकाई की रूपरेखा

23.0 उद्देश्य

24.1 प्रस्तावना

24.2 रत्नों की उत्पत्ति

24.2.1 खनिज रत्न

24.2.2 जैविक रत्न

24.3 रत्न शब्द की प्राचीनता व रत्नों का इतिहास

24.4 रत्न परिचय

24.4.1 नव रत्न स्वरूप

24.5 रत्न तथा आयुर्वेद

24.6 सारांश

24.7 उपयोगी पुस्तकें

24.8 अभ्यास प्रश्न

24.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

24.0 उद्देश्य

- रत्नों की उत्पत्ति व इतिहास से अवगत कराना।
- रत्नों के स्वरूप से परिचय कराना।
- रत्न–विज्ञान की अद्भुत ज्ञान शाखा के विषय को और अधिक जानने की जिज्ञासा उत्पन्न कराना।
- रत्न धारण अन्धविश्वास नहीं, अपितु एक विज्ञान है, जो विभिन्न रासायनिक क्रियाओं के परिणाम स्वरूप मनुष्य के शरीर पर प्रभाव डालता है। इसका ज्ञान कराना।
- रत्नों का भस्म के रूप में आयुर्वेदीय प्रयोग से अवगत कराना।

24.1 प्रस्तावना

रत्न शब्द का शाब्दिक अर्थ मणि, आभूषण हीरा अथवा किसी भी मूल्यवान पदार्थ, जो अपने आप में श्रेष्ठ हो प्रायः रत्न के अन्तर्गत आते हैं। प्राचीनकाल से ही विद्वानों ने अपनी सूक्ष्मदृष्टि एवं ज्ञानानुभूति के आधार पर मानव जीवन पर ग्रह राशियों के प्रभाव का आंकलन किया है। जिससे मानव जीवन की शारीरिक व मानसिक विसंगतियाँ दूर करके मनुष्य सुखपूर्वक जीवन का निर्वाह कर सकें। रत्न प्रकृति प्रदत्त एक अतुल्य धरोहर है। मनुष्य प्राचीनकाल से आज तक ही रत्नों के प्रति आकर्षित रहा है। रत्न आभूषणों के रूप में शरीर के सौन्दर्य की वृद्धि तो करते ही हैं। साथ ही अपनी दैवीय शक्तियों के प्रभाव से (अर्थात् विभिन्न रासायनिक क्रिया के अद्भुत प्रभाव के कारण)

मनुष्य को श्रेष्ठ मनुष्य बनाने की प्रक्रिया में सहायक होते हैं। निपुण वैद्यों द्वारा रत्नों की भस्म तैयार की जाती है, जो एक जटिल प्रक्रिया है। रत्नों का प्रयोग आयुर्वेद में विभिन्न रोगों के निवारण के लिए किया जाता है। रत्न विभिन्न प्राकृतिक शक्तियों के प्रभाव से अपनी ऊर्जा का स्थानांतरण करते हैं। जिससे मानव जीवन पर रत्न का प्रभाव परिलक्षित होता है। रत्नों का प्राकृतिक रंगों एवं ग्रहों साथ सम्बन्ध है। प्रत्येक रत्न अपने रंग के अनुरूप अपने ग्रह के साथ जुड़कर मानव जीवन में सामंजस्य बिठाता है। इसी कारण से ग्रहों की दिशा, दशा को जानकर निपुण ज्योतिषी की सलाह से रत्न धारण करना चाहिये। रत्नों का प्रभाव कोई अंधविश्वास नहीं हैं, अपितु रत्न विभिन्न रासायनिक क्रियाओं के परिणाम स्वरूप अपना प्रभाव डालते हैं। वस्तुतः यह एक विज्ञान है। रत्नों के इस विशिष्ट ज्ञान को ही रत्न–विज्ञान कहा गया है।

24.2 रत्नों की उत्पत्ति

रत्न शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है श्रेष्ठ। रत्न शब्द का प्रयोग कई अर्थों में प्राप्त होता है, जो सर्वत्र श्रेष्ठता का ही द्योतक है। रत्नों के स्वरूप की दृष्टि से रत्नों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) खजिन रत्न

(2) जैविक रत्न

24.2.1 खनिज रत्न

प्राकृतिक रूप से प्राप्त होने वाले रत्न जिनका निश्चित रासायनिक संघटन हो वह एक खनिज रत्न है। खनिज रत्न सभी स्थानों पर समान रूप से वितरित नहीं होते हैं, अपितु वे किसी विशेष क्षेत्र में समूहों में सकेंद्रित होते है। कुछ ऐसे खनिज रत्न भी है जो आसानी से प्राप्य नहीं है। वस्तुतः ये रत्न विभिन्न प्रकार के भूमि विशिष्ट परिवेश में अलग–अलग दशाओं में निर्मित होते हैं, जो बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा निर्मित होते हैं तथा अपने भौतिक गुणों जैसे– रंग, कठोरता, घनत्व और रासायनिक गुणों के आधार पर पहचाने जा सकते हैं जैसे– हीरा आदि। पृथ्वी की सतह के अन्दर से खनिजों को बाहर निकालने की प्रक्रिया को ही 'खनन' कहा जाता है।

24.2.2 जैविक रत्न

ऐसे रत्न जो वनस्पतियों और जीवित जीवों की जैविक प्रक्रिया के द्वारा निर्मित होते हैं। जैविक रत्न कहलाते हैं। जैविक रत्न में केवल मूँगा व मोती ही आते हैं। मोती घोंघा नामक एक जन्तु जिसे मॉलस्क भी कहते हैं। अपने शरीर से निकलने वाले एक तरल चिकने पदार्थ द्वारा अपने घर का निर्माण करता है। जिसे 'सीपी' कहते हैं। मोती बनाने की प्रक्रिया में जब घोंघे जल, वायु व भोजन की आवश्यकता की पूर्ति हेतु अपने सीपी के द्वार को खोलते हैं तब कुछ विजातीय पदार्थ (अर्थात् जल, वायु व भोजन के अतिरिक्त पदार्थ) जैसे रेत, कण, कीड़े–मकोड़े आदि उस सीपी में प्रवेश कर जाते हैं, और घोंघा अपनी त्वचा से निकलने वाले तरल चिकने पदार्थ की परते उस विजातीय पदार्थ पर चढ़ाने लगता है। इसी प्रकार से मोती का निर्माण होता है। आधुनिक समय में मोती की खेती भी की जाती है जिसके लिए कृषि विशेषज्ञ शरद ऋतु अर्थात् अक्टूबर से दिसम्बर के समय को उपयुक्त बतलाते हैं।

24.3 रत्न शब्द की प्राचीनता एवं रत्नों का इतिहास

मानव सभ्यता के इतिहास में रत्नों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। 'रत्न' से अभिप्राय किसी भी मूल्यवान पदार्थ से है, और विज्ञान वह शाखा है जिसकी सहायता से निरपेक्ष सत्य की स्वानुभूति से प्राप्त ज्ञान को प्रायोगिक रूप से परिणित करके परिणाम को प्रतिष्ठित किया जाता है। बहुमूल्य पत्थर अथवा रत्न कुछ ऐसे खनिज पदार्थ, जो विभिन्न रासायनिक क्रियाओं के परिणामस्वरूप अपने अन्दर अद्भुत दैवीय शक्तियों के प्रभावों से प्रकृति के विभिन्न रूपों में प्राप्त होते हैं। रत्न शब्द की प्राचीनता का अवलोकन करते हुए यह कहना अनुचित न होगा कि सृष्टि के सर्वप्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र में 'रत्न' शब्द का प्रथम प्रयोग मिलता है। यथा–

> **अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।**
> **होतारं रत्नधातमम्।। (ऋ. 1/1/1)**

ऋग्वेद के अनेक मन्त्रों में रत्न शब्द का प्रयोग 'मणि' इत्यादि अर्थों में भी प्राप्त होता है। वेद प्राणि जगत् के आध्यात्मिक आधिदैविक तथा आधिभौतिक आदि दुःखों के निवारक माने जाते हैं। आधिभौतिक से अभिप्राय है कि अग्नि रत्नों या धातुओं का सर्वोत्तम धारक और उत्पादक है। ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र में धातमम् पद में 'धा' धातु का एक अर्थ उत्पन्न करना भी है। रत्नों के लिए अंग्रेजी में ळमउेजवदमे शब्द का प्रयोग किया जाता है। ळमउेजवदमे पर टिप्पणी करते हुए अमरीकी विश्वकोष में कहा गया है कि अधिकांश रत्न प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से ताप–प्रक्रिया के परिणाम है। वस्तुतः जब असाधारण रूप से दशायें अनुकूल होती है, तभी प्राकृतिक रूप से रासायनिक क्रियाओं के द्वारा रत्न बन पाते हैं। रत्नों की निर्माण प्रक्रिया के सम्बन्ध में आधुनिक वैज्ञानिकों का कहना है, कि कार्बन आदि तत्त्वों के परमाणु बहुत अधिक ताप व अत्यधिक दबाव के प्रभाव में आकर एक अवस्था को प्राप्त कर एक प्रकार का विशेष गुणकारी पदार्थ बन जाते हैं। जिन्हें हम हीरा, मणि आदि रूपों में जानते हैं। यही पदार्थ रत्नों की संज्ञा से जाने जाते हैं। रत्न अर्थात् जिनमें मनुष्य का मन रमा, सर्वप्रथम मनुष्य इन पदार्थों के ऊपरी सौन्दर्य पर मुग्ध हुआ और इनका प्रयोग के प्रभाव को जानकर इनके गुणों पर मुग्ध हुआ। आयुर्वेद प्रकाश में कहा भी गया है–

> **"रमन्ते अस्मिन् अतीव अतः रत्नम् इति प्रोक्तं शब्दशास्त्रविशरदैः" (आयुर्वेद प्रकाश 5–2)**

भारतीय संस्कृति में रत्न धारण करने की परम्परा बहुत प्राचीन है। जिसका सन्दर्भ ऋग्वेद के छठे मंडल के 19वें सूक्त के 10वें मन्त्र में रत्न धारण करने का स्पष्ट संकेत प्राप्त होता है।

> **नृवत्त इन्द्र नृतमाभिरूती वंसीमहि वामं श्रोमतेभिः।**
> **ईक्षे हि वस्व उभयस्य राजन्धा रत्नं महि स्थूरं बृहन्तम्।। (ऋ. 6/19/10)**

24.4 रत्न परिचय

रत्नों के प्रति सम्पूर्ण संसार प्राचीन काल से ही आकर्षित रहा है। प्रकृति की यह रत्न धरोधर संसार के लगभग सभी देशों में किसी न किसी रूप में प्राप्त होती है। रत्न केवल सौन्दर्य वर्धक आभूषणों के रूप में ही नहीं अपितु वैद्य शास्त्रानुसार विभिन्न प्रकार के रोग–निवारक शक्ति वाले भी होते हैं। ऐसा माना जाता है इन रत्नों में

अद्भुत दैवीय शक्तियाँ निहित होती है। यह कोरी कल्पना नहीं है अपितु इस मान्यता का आधार वैज्ञानिक है जिसे आप इस अध्याय की विषयवस्तु पढ़कर स्पष्ट रूप से समझ सकेगें। अनेक शास्त्रीय ग्रन्थों के अध्ययन से यह तो स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि रत्नों की निश्चित संख्या का निर्धारण नहीं किया जा सकता है। रत्नों में नौ (9) रत्न माणिक्य, मोती, प्रवाल (मूँगा), पन्ना, पुष्पराग (पुखराज), हीरा, नीलम, गोमेद और वैदूर्यमणि (लहसुनिया) नवरत्नों की श्रेणी में प्रतिष्ठित है। इन नवरत्नों में भी माणिक्य, मोती, हीरा, नीलम और पन्ना को अति विशिष्ट स्थान प्राप्त है। उपरोक्त नवरत्नों के अतिरिक्त कुछ रत्न 'उपरत्न' की श्रेणी में आते हैं। यथा–

वज्रं विद्रुममौक्तिके मरकतं वैदूर्यगोमेदके
माणिक्यं हरिनीलपुष्पद्रषदौ रत्नानि नाम्ना नव।
यान्यन्यान्यमपि सन्ति कानिचिदिह त्रैलोक्यसीम्नि
स्फुटं नाम्ना तान्युपरत्नतान्युपगतान्याहुः परीक्षाकृतः।। (आयुर्वेद प्रकाश 5/4)

कुछ ऐसे भी विशिष्ट पत्थर है जिन्हें रत्न तो नहीं कहा जा सकता किन्तु उनको उपरत्नों की श्रेणी में रखा जाता है। उपरत्नों की श्रेणी में रखने का कारण इनके अन्दर निहित अद्भुत शक्ति अथवा विभिन्न रासयनिक तत्त्वों का संमिश्रण, जो मानव जीवन के लिए किसी न किसी रूप में अत्यन्त लाभकारी है। जैसे 'पारा जहर' नामक उपरत्न से घाव तथा विषैला घाव शीघ्र ठीक हो जाते हैं। 'कसौटी' का प्रयोग सोने धातु की परीक्षा के लिए होता है। **'हजरते ऊद'** आँख की औषधी के लिए प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार रत्न व उपरत्न अनेकों असाध्य रोगों तथा मानव जीवन के लिए अत्यन्त हितकारी है।

24.4.1 नवरत्नों का स्वरूप

माणिक्य–माणिक्य दो प्रकार का होता है। लाल रंग का पद्मराग और कुछ लाल रंग के साथ नीलापन लिये नीलगन्धि माणिक्य कहलाता है। रसरत्नसमुच्चय में चिकना, स्वच्छ, वजनदार, गोल, लम्बा, एक समान स्थिति वाले माणिक्य को श्रेष्ठ माना है। रत्न प्रयोग करने में निपुण वैद्य के मतानुसार उत्तम माणिक्य धारण करने से वात पित्त नष्ट होते हैं और मनुष्य कल्याण को प्राप्त करता है।

माणिक्यं मधुरं स्निग्धं वार्ताफ्तीवनाशनम्।
रत्नप्रयोगविज्ञानां रसायनकरं परम्।। (आयुर्वेद प्रकाश 5/100)

माणिक्य का विशिष्ट गुरुत्व 4 और काठिन्य 9 होता है। जो हीरा से थोड़ा सा अर्थात् एक काठिन्य ही कम है। हीरे का काठिन्य 10 माना जाता है। मूल्य की दृष्टि से माणिक्य अन्य रत्नों की अपेक्षा मूल्यवान है। जौहरियों की एक कहावत है– माणक की दलाली में हीरा बिक जाता है। माणिक्य प्रधानतः एल्युमिनियम और ऑक्सीजन का यौगिक है तथा लोहे और क्रोमियम के न्यूनमात्रा मिश्रण के द्वारा लाल रंग का दिखाई पड़ता है। वर्मा, सोलोन, लंका आदि देशों में माणिक्य की खाने ;डपदमद्ध है। यदि माणिक्य छिद्रयुक्त, कक्रशतायुक्त, मलिन, रुखा, जो आर–पार न दीखे, चपटा हलका और विकृत हो, ऐसा रत्न शरीर पर धारण नहीं करना चाहिये, उसको त्याग देना चाहिए। यह दोषयुक्त माणिक्य होता है।

रंध्रकाक्रश्यमालिन्यरौक्ष्याऽवैशद्यसंयुतम्।
चिपिटं लघुवक्रं च माणिक्यं दुष्टमष्टधा।। (रसरत्नसमुच्चय 4/11)

माणिक्य के गुण–माणिक्य जठर अग्नि को दीपन करने वाली, वीर्यवर्धक, कफ, वात और क्षयरोग को नष्ट करने वाली, भूत–वेताल, पापदोषों का हरण करने वाली तथा कर्मज व्याधियों की नाशक होती है।

1. **मौक्तिक (मोती)**–चित्त को प्रसन्न करने वाला, श्वेत वर्ण वाला, हल्के वजन का, चिकना, चन्द्रकिरण के समान उज्ज्वल, बड़ा तथा गोल मोती उत्तम होता है। ऐसा मोती धारण करने योग्य शुभ फल देने वाला होता है। जो रुखा हों, जिसमें काली झाई दीखती हो या जो ताम्र के समान लाल हो अथवा सैंधे नमक के समान वर्ण वाला हो, जो दो वर्णों वाला हो, टेढ़ा, ऊँचा–नीचा या गाँठदार हो ऐसा त्यागने योग्य निकृष्ट कोटि का मोती होता है। जो अशुभ फलदायक होता है।

2. **मोती के गुण**–मौक्तिक छोटा (लघु) शीतल, मधुर, कान्तिवर्द्धक, नेत्रों की ज्योति बढ़ाने वाला, जठर अग्नि को दीप्त करने वाला, शरीर पुष्टिवर्धक, विष का नाशक तथा वीर्यवर्द्धक होता है। मोती के विशेष गुण कफ, पित्त, क्षय, खाँसी, श्वास, मन्दाग्नि को नष्ट करने वाला तथा आयु को बढ़ाने वाला होता है। मोती को शुक्लपक्ष में चाँदी के साथ धारण करना चाहिए। प्रधानतः मोती में कैल्सियम, कार्बन और ऑक्सीजन ये तीन तत्त्व पाये जाते हैं। इसका रासयनिक सूत्र ब्भ्ब्$_3$ होता है। इसके अतिरिक्त इसमें कुछ अन्य तत्त्वों का भी समावेश होता है। जिससे इसमें उत्तम औषधीय गुण आ जाते हैं।

3. **पन्ना**–हरे रंग का, भारी वजन वाला, चिकना, उज्ज्वल किरणों से युक्त, तेजयुक्त कक्रशता से रहित पन्ना शुभ होता है और भूरे रंग का कक्रश, पाण्डुवर्ग अथवा काले पीले मिश्रित रंग का, वजन में हल्का, चपटा टेढ़ा, काला और रुखा ऐसा पन्ना निकृष्ट श्रेणि का होता है–

    कपिलं कक्रशं नीलं पाण्डु कृष्णं च लघवम्।
    चिपिटं विकटं कृष्णं रूक्षं तार्क्ष्यं न शस्यते।। (रसरत्नसमुच्चय 4/21)

आयुर्वेद प्रकाश में निकृष्ट पन्ने को धारण नहीं करने के निर्देश दिये हैं क्योंकि ऐसा रत्न अनिष्ट का कारक होता है–

शक्ररिलरूक्षमलिनं लघु हीनकान्तिमकल्मापम्।
त्रासयुतं विकृताङ्गं मरकतममरोऽपि नोपभुंजीत।। (आयुर्वेद प्रकाश 5/107)

पन्ने का अन्य नाम मरकत भी है। पन्ना सिलिका, एल्युमिना, वेरिलियम् और ऑक्सिजन इन चार तत्त्वों का यौगिक है। क्रोमिक ऑक्साइट के योग से इसका रंग सुन्दर हरा सा हो जाता है। पारदर्शी पन्ना खण्ड बहुमूल्य होते हैं। पन्ने का विशिष्ट गुरुत्व 3 तथा काठिन्य 7 होता है।

पन्ने के गुण–पन्ना बुखार, विष विकार, श्वास, मंद अग्नि, पाण्डुरोग, बवासीर और सूजन को दूर करके ओज को बढ़ाने वाला होता है।

4. **प्रवाल** (मूँगा)– मूँगा पकी हुई कन्दूरी के समान रक्त वर्ण का हो, गोल, सरल, चिकना, छिद्ररहित स्थूल प्रवाल 'उत्तम' होता है और यदि पीलापन लिये, फीके रंग का, धूमिल सा अत्यन्त बारीक, छिद्रयुक्त रेखा वाला, हल्के वजन युक्त, सफेद रंग का प्रवाल निम्न श्रेणी का या दोषपूर्ण अशुभ मूँगा माना जाता है। इसे त्याग देना चाहिय।

प्रवाल (मूँगा) के गुण– रक्तपित्त, खाँसी, विषविकार, नेत्र रोग को दूर करने वाला होता है। रासयनिक दृष्टि से मूँगे में कैल्सियम, कार्बन और ऑक्सीजन इन तत्त्वों की उपलब्धता होती है। इसका रासायनिक सूत्र कैल्सियम कार्बोनेट है।

5. **पुष्पराज (पुखराज)**– पुखराज वजन में भारी, चिकना, स्वच्छ स्थूल, कोमल इस प्रकार का पुखराज निर्दोष घिसने पर अपने रंग को अधिक बढ़ाने वाले को उत्तम पुखराज माना जाता है। काले रंग की बिन्दु–बिन्दु वाला, छिद्रयुक्त, मलिन, हल्का और बेरंग सा पुखराज निम्न कोटि का रत्न जाना जाता है।

   पुखराज के गुण–यह रत्न वमन, कफ, वायु, मन्दाग्नि, कुष्ठ और रुधिर संबंधी विकारों का शमन करता है। रासायनिक दृष्टि से पुखराज में एल्युमिनियम फ्लोरीन, सिलिकान और ऑक्सीजन तथा जलीय अंश पाया जाता है इसका विशिष्ट गुरुत्व 3.5 तथा काठिन्य 8 होता है।

6. **हीरा**–रत्नों में वज्र अर्थात् हीरा नर जातिका, स्त्री जाति का तथा नपुंसक जाति भेद से तीन प्रकार का कहा गया है। नरजाति का हीरा अष्ट कोने वाला, अत्यन्त तेज से युक्त कमल अथवा इन्द्रधनुष के समान प्रकाशमान और जल में तैरने वाला उत्तम श्रेणी का माना जाता है। चपटा, लम्बा व गोल हीरा स्त्रीजाति का समझना चाहिये। नपुसंक जाति का हीरा गोल और वजन में भारी होता है। इस प्रकार तीनों प्रकार के हीरे को क्रमशः पुरुष, स्त्री और नपुंसक इन तीनों प्रकार के मनुष्य में प्रयोग करने चाहिये। पुरुष जाति का हीरा श्रेष्ठ माना जाता है, जिसे शेष दोनों जाति के लोग भी धारण कर सकते हैं किन्तु शेष दो अर्थात् स्त्री जाति व नपुंसक जाति के हीरे को केवल वो ही धारण कर सकते हैं।

हीरे के गुण–हीरा आयु वर्द्धक, शरीर के गुणों का प्रकाशक, वीर्य वर्द्धक। त्रिदोष अर्थात् वात, कफ व पित्त के दोषों का नाश करता है। आयुर्वेदीय ग्रन्थों में रत्नों को भस्म के रूप में भी उपयोग करने की चर्चा प्राप्त होती है। हीरे की भस्म, पारे को बाँधकर अर्थात् जोड़कर पारे की भस्म करने और पारे के साथ मिश्रित होकर पारे के गुणों का दीपन करने के लिये अत्यन्त उपयोगी है। यह अमृत के समान जीवनदायिनी है।

7. **वैदूर्य**–वैदूर्यमणि का रंग बिल्ली की आँखों के समान होता है। स्वच्छ, वजन में भारी तेजयुक्त और भीतर सफेद रंग की रेखाओं से युक्त वैदूर्यमणि को उत्तम माना जाता है तथा काले रंग की, जल के छायावाली, चपटी, हलकी, अन्दर लाल रंग रेखा दिखाई दे, ऐसी वैदूर्यमणि निकृष्ट होती है।

वैदूर्यमणि के गुण–रक्तपित्त का नाशक, आयु, बुद्धि और शक्तिवर्द्धक, पित्त प्रधान रोगों को नाश करने वाला कहा गया है। वैदूर्य में प्रधानतः एल्यूमिनियम, वेरिलियम तथा स्वल्प मात्रा में अयस् और क्रोमियम नामक तत्त्व विद्यमान होते हैं।

8. **गोमेद**–गाय के घी के समान वर्णवाली होती है। इस कारण से इसको गोमेद मणि कहते हैं। साफ, उज्ज्वल, चिकनी, जो टेढ़ी या ऊँची–नीची न हो, भार में अधिक, परतरहित, कोमल और प्रकाशमान इन आठ गुणों से युक्त गोमेदमणि उत्तम होती है। कान्तिहीन, हल्की, रुखी, चपटी, परतयुक्त आभा रहित तथा पीछे काँच के समान गोमेद मणि अशुभ होती है।

गोमेद के गुण–गोमेद कफपित्त को नष्ट करता है। क्षयरोग और पाण्डुरोग को दूर

करता है, पाचन शक्ति को रुचिवर्द्धक त्वचा के सौन्दर्य को बढ़ाने वाला तथा बुद्धि को बढ़ाने वाला कहा गया है। यथा–

गोमेदं कफपित्तघ्नं क्षयपाण्डुक्षयकरम्।।
दीपनं पाचनं रुच्यं त्वच्यं बुद्धिप्रबोधनम्।। (रसरत्नसमुच्चय 4/56)

9. **नीलम**– जलनील और इन्द्रनील भेद से नीलम दो प्रकार का होता है। जिसमें इन्द्रनील को श्रेष्ठ माना जाता है। जलनील का वर्ण कुछ सफेदी युक्त हल्का नीला होता है और साथ ही हलका होता है और इन्द्रनील कालेपन के साथ नीला अर्थात् गहरा नीले रंग का, भारी वजन वाला होता है। जो नीलम, एक समान छाया युक्त, भारी, चिकना, पिण्डकार, कोमल और मध्य भाग से अत्यन्त चमकदार ऐसे गुणों से युक्त नीलम उत्तम होता है तथा तेज से हीन, रंग परिवर्तन करने वाला, वजन में हल्का, चपटा और बहुत छोटा ऐसे लक्षणों से युक्त जलनील होता है। यह जलनील निम्न कोटि का माना जाता है।

नीलम के गुण–यह रत्न श्वास सम्बन्धी रोगों को नष्ट करता है। वीर्यवर्द्धक, त्रिदोष अर्थात् कफ–वात–पित्त के दोषों को दूर करता है। यह धारण करने से मानव के लिए मंगलदायी होता है परन्तु रत्नों को धारण करने में विशेष सावधानी रखनी चाहिये अन्यथा मंगल के स्थान पर अमंगलकारी सिद्ध हो सकते हैं।

इस प्रकार नव रत्नों की विस्तृत चर्चा रसरत्नसमुच्चय के चतुर्थ अध्याय में प्राप्त होती है–

मणयोपि च विज्ञेयाः सूतबन्धनकारकाः।
वैक्रांतः सूर्यकांतश्च हीरकं मौक्तिकं मणिः।।1।।
चन्द्रकांतस्तथा चैव राजावर्तश्च सप्तमः।
गरुडोद्गारकश्चैव ज्ञातव्या मणयस्त्वमी।।2।।
पुष्परागं महानीलं पद्मरागं प्रवालकम्।
वैडूयै च तथा नीलमेतेऽपि मणयो मताः।।
यत्नतः संग्रहीतव्या रसबंधस्य कारणात्।।3।।
पद्मरागेंद्रनीलाख्यो तथा मरकतोत्तमः।
पुष्परागः सवज्राख्यः पंचरत्नवराः स्मृताः।।4।।
माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमणि तार्क्ष्यै च पुष्पं भिदुरं च नीलम्।
गोमेदकं चाथ विडूरकं च क्रमेण रत्नानि नवग्रहाणाम्।।5।। (रसरत्नसमुच्चय 4/1–5)

24.5 रत्न तथा आयुर्वेद

आवर्युेद में मानव कल्याण की दृष्टि से रत्नों के गुणों का औषधि के रूप प्रयोग किया है। आयुर्वेद में मुख्य रत्नों का औषधियों के लिये भस्म के रूप में ही प्रयोग मिलता है। भस्म तैयार करने की प्रक्रिया अत्यन्त जटिल है, इसका निर्माण निपुण वैद्य के द्वारा ही सम्भव है। हमारे वैद्य प्राचीन समय से ही भस्म तैयार करते रहे हैं आधुनिक समय में भी स्वर्णभस्म इत्यादि भस्म सरलता से बाजार में प्राप्त होती है। आयुर्वेद के अनुसार भिन्न भस्मों की शक्ति के प्रभाव का विवरण निम्नलिखित है–

(1) **चुन्नी भस्म–** यह दीर्घायु प्रदायक है। वात, पित्त और कफ को शान्त करता है। चुन्नी भस्म शरीर के अंग–प्रत्यंग के जलन को भी दूर करता है।

(2) **मुक्ता भस्म–** मुक्ता भस्म नेत्रों का शक्तिवर्द्धक, नारी सौन्दर्य को बढ़ाने वाला तथा दीर्घायु देने वाला है।

(3) **प्रवाल भस्म–**यह भस्म कफ और पित्त जनित रोगों को दूर करता है। बाल्यकाल की विकृति को ठीक करता है नियमित रूप से सेवन करने से शरीर की शक्ति बढ़ाता है।

(4) **पन्ना भस्म–** आयुर्वेद के अनुसार पन्ना, ठंडा, मीठा और मेदवर्द्धक कहा है। अम्लपित्त और जलन को दूर करता है।

(5) **श्वेत पुखराज भस्म–** यह भस्म विष और विषाक्त बीजाणु की क्रिया को नष्ट करता है। नियमपूर्वक कुशल वैद्य की सलाह से इस भस्म का सेवन से मनुष्य बुद्धिमान और मेधावी बनता है।

(6) **हीरक भस्म–**यह हीरे से तैयार की जाती है। हीरक भस्म आयु की वृद्धि करता है शरीर को शक्तिशाली बनाता है और तन्तुओं को पुष्ट करता है। चेहरे के सौन्दर्य की वृद्धि करता है तथा शरीर को सुख और आराम देता है।

(7) **नीलम भस्म–**नीलम भस्म का प्रयोग मानसिक विकार, जड़बुद्धि, असयम आचरण, गठिया, भ्रान्ति आदि रोगों के निदान के लिये किया जाता है। आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार प्रतिवर्ष बहुत कीमती रत्नों को रोगनाशक गुणों युक्त होने के कारण से नष्ट (भस्म रूप में) कर दिया जाता था। इस प्रकार भस्म रूप में प्रयोग करने तथा रत्नों को धारण करने से भी अनेकों रोगों का निदान सम्भव है। जिसको रत्न–चिकित्सा कहा जाता है।

विशेष–रसरत्नसमुच्य के पंचम अध्याय में भस्म निर्माण प्रक्रिया का वर्णन प्राप्त होता है।

रत्न और ज्योतिष–रत्नों व उपरत्नों में माणिक्य, प्रवाल (मूँगा), पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद तथा वैदूर्यमणि को 'नवरत्न' के नाम से जाना जाता है। शास्त्रीय परम्परा में 'रत्न' के लिए मणि शब्द का प्रयोग होता था। ये मणियाँ मनुष्य के बुढ़ापे और रोगों को हरने वाली कही गई है–

> **मणयोऽपि च विज्ञेयाः सूतबन्धस्य कारकाः।**
>
> **देहस्य धारका नृणां जराव्याधिविनाशकाः।। (आयुर्वेद प्रकाश 5/1)**
>
> **शुक्रनीति में इन सभी नौ रत्नों को 'महारत्न' कहा है।**
>
> **व्रजं मुक्ता प्रवालं च गोमेदश्चेन्द्रनीलकः।**
>
> **वैदूर्यः पुष्परागश्च पाचिर्माणिक्यमेव च।।**
>
> **महारत्नानि चैतानि नव प्रोक्तानि सुरिभिः।। (कोशनिरूपणप्रकरण, शुक्रनीतिसार 41)**

नवरत्नों के अन्य नाम और उनकी योनियाँ– इन रत्नों को अलग–अलग अन्य नामों से भी जाना जाता है। जैसे– हीरा पुल्लिंग शब्द है। हीरा को वज्र, चन्द्र और मणिवर नामों से भी जाना जाता है। गारुत्मत (पन्ना) के मरकत, अश्मगभ और हरिन्मणि नाम

है। पुष्पराग अर्थात् पुखराज के मजुमणि और वाचस्पतिवल्लभ नाम भी है। नीलम के इन्द्रनील और नील नाम है। गोमेद के गोमेद और पीतरक्तक नाम है। वैदूर्य (लहसुनिया मणि) के वैदूर्य, दूरजरत्न और केतुग्रहवल्लभ नाम है। मोती के लिए मौक्तिक, शौक्तिक, मुक्ता और मुक्ताफल शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। प्रवाल शब्द पुल्लिंग और नपुंसकलिंग तथा विद्रुम केवल पुल्लिंगवाची है। शुक्ति, शख, गज, क्रोड, नाग, मत्स्य, मेढक ओर वेणु ये आठ मोतियों की योनियाँ है।

नवरत्न के वर्ण और नवग्रहों का रत्न सम्बन्ध–यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड सात रंगों का एक प्रत्यक्ष रूप है। जो इन्द्रधनुष के रूप में परिलक्षित भी होती है। सृष्टिकर्त्ता इन ज्योतियों द्वारा ही सम्पूर्ण चराचर जगत का सृजन, पालन और संहार करते हैं। कूर्म पुराण में तो कहा गया है कि सात ग्रह भी इन सात ज्योतियों अर्थात् रंगों के ही घनीभूत अवस्थायें हैं और सप्त ग्रहों का पोषण इन्हीं ज्योतियों द्वारा होता है। ग्रहों के समान ही उनके पवित्र रत्न भी सात रंगों के घनीकृत रूप है। मनुष्य के कल्याण और रोगमुक्ति के लिए रत्नों का प्रयोग भिन्न–भिन्न रूपों में किया जाता है। शुक्रनीति में नवरत्नों का सम्बन्ध विभिन्न रंगों एवं ग्रहों से बतलाया गया है–

रवेः प्रियं रक्तवर्ण माणिक्यं त्विन्द्रगोपरुक्।।
रक्तपीतसितश्यामच्छविर्मुक्ता प्रिया विधोः।
सपीतरक्तरुग्भौमप्रियं विद्रुममुत्तमम्।।
मयूरचाषपत्राभा पाचिर्बुधाहिता हरित्।
स्वर्णच्छविः पुष्परागः पीतवर्णी गुरुप्रियः।।
अत्यन्तविशदं वज्रं तारकाभं कवेः प्रियम्।
हितः शनेरिन्द्रनीलो ह्यसितो घनमेघरुक्।
गोमेदः प्रियकृद्राहोरीषत्पीतारुणप्रभः।
ओत्वक्ष्याभश्चलत्तन्तु वैदूर्य केतुप्रीतिकृत्।। (शुक्रनीति 4/42–26)

अर्थात् वीरवहूटी कीडे के समान लाल रंग का मणिक (लाल) होता है, यह सूर्य को प्रिय है। लाल, पीली, श्वेत तथा श्याम वर्ण की कान्तिवाली मोती होती है। मोती चन्द्रमा को प्रिय है। पीली तथा लालकान्ति से युक्त उत्तम मूँगा होता है। जो मंगलग्रह को प्रिय है। मयूर तथा चास पक्षी के पंख के सादृश कान्तिवाला पन्ना हरित वर्ण युक्त बुध ग्रह को प्रिय होता है।

स्वर्ण सादृश पीले वर्ण की कान्तिवाला पुखराज होता है, जो गुरु ग्रह को प्रिय होता है। अत्यन्त स्वच्छ तारे के समान चमकने वाला हीरा होता है, जो शुक्र ग्रह को प्रिय है। घने बादल के समान कान्तिवाला नीले रंग का नीलम शनि ग्रह का प्रिय है। कुछ लाल तथा पीली कान्ति वाला लहसुनिया राहु का प्रिय है तथा बिलार अर्थात् बिल्ली की आँखों के जैसी कान्ति तथा जो किरणों से युक्त हो उसे वैदूर्य कहते हैं। इसका सम्बन्ध केतु से है। इस प्रकार से रत्नों का सम्बन्ध ग्रहों से होता है ग्रहों की प्रसन्नता के लिए रत्नों को धारण करने के लिए कहा गया है–

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमणि गारुत्मकं पुष्पकवज्रनीलम्।
गोमेदवैदूर्यकमक्रतः स्यू रत्नान्यथो ज्ञस्य मुदे सुवर्णम्।। (मुहूर्तचिन्तामणि गोचरप्रकरण 10)

अर्थात् सूर्य की प्रसन्नता के लिये मानिक, चन्द्रमा के लिये मोती, मंगल के

लिये मूँगा, बुध के लिये पन्ना, गुरु के लिये पुखराज, शुक्र के लिये हीरा, शनि के लिए नीलम, राहु के लिये गोमेद, केतु के लिये वैदूर्य (लहसुनिया) और बुद्ध के प्रसन्नतार्थ पन्ने को सोने के साथ धारण करना चाहिये।

नवग्रह शान्तिहेतु रत्न धारण यन्त्र स्वरूप—एक चौकोर यन्त्र बनाकर उसमें 3×3 नौकोष्ठों की कल्पना करके पूर्व में शुक्र के लिये हीरा, अग्निकोण में चन्द्रमा के लिए मोती, दक्षिण में भौम के लिये मूँगा, नैर्ऋत्यकोण में राहु के लिये गोमेद, पश्चिम में शनि के लिए नीलम, वायव्यकोण में केतु के लिए वैदूर्य (लहसुनिया) उत्तर में गुरु के लिये पुखराज, ईशानकोण में बुध के लिये पन्ना और मध्य में सूर्य के लिये मानिक धारण करना चाहिये—

> **वज्रं शुक्रेऽब्जे सुमुक्ता प्रवालं भौमेऽगौ गोमेदमार्कौ सुनीलम्।**
> **केतौ वैदूर्यं गुरौ पुष्पकं ज्ञे पाचिः प्राड्मणिक्यमर्के तु मध्ये।। (मुहूर्तचिन्तामणि गोचरप्रकरण/9)**

यन्त्र स्वरूप

बु.	शुक्र	च.
बृ.	सू.	मं.
के.	श.	रा.

यन्त्र स्वरूप के अनुसार ग्रहों की स्थिति को जानकर ही रत्नों को धारण करना चाहिये। इष्ट कार्यों की सिद्धि के लिये रत्नों की अंगूठी पहननी चाहिये। रसायन कार्य, दान, धारण, देवपूजन और अनेक प्रकार इष्ट कार्यों की सिद्धि हेतु उत्तम और निर्दोष रत्नों का उपयोग करना चाहिये।

रसरत्नसमुच्चय के अनुसार नवरत्न धारण करके ग्रहों की पीड़ा से बचा जा सकता है तथा आरोग्य की प्राप्ति के साथ आयु की वृद्धि होती है। सौभाग्य का उदय होता है। वशीकरण की सिद्धि होती है। उत्साह, धैर्य तथा बल बढ़ता है एवं अमंगल छाया दूषित हवा और धूल आदि से उत्पन्न हुए अलक्ष्मी आदि दोष आदि बाधाएँ दूर होती है—

> **सूर्यादिग्रहनिग्रहापहरणं दीर्घायुरारोग्यदं**
> **सौभाग्योद्भाग्यवश्यविभवोत्साहप्रदं धैर्यकृत्।**
> **दुश्छायाचलधूलिसंगतिभवाऽलक्ष्मीहरुं सर्वदा**
> **रत्नानां परिधारणं निगदितं भूतादिनिर्णाशनम्।। (रसरत्नसमुच्चय 5/78)**

वस्तुतः जिस ग्रह का जो रत्न बताया गया है, वह ग्रह जब जन्मकुण्डली, महादशा या अन्तर्दशा में अनिष्ठ स्थान पर बैठकर अशुभ फलदायक हो, ऐसी स्थिति में उस ग्रह की शान्ति, अनिष्ठ का प्रतिहार करने, इष्ट उपलब्धि की सिद्धि हेतु तथा ग्रह की प्रसन्नता के लिये उत्तम जाति के रत्न को धारण करना चाहिये। रत्न धारण करने पर वह रत्न शरीर को स्पर्श होना आवश्यक है। क्योंकि रत्न शरीर स्पर्श से ही अपने

प्रभावी गुण, रत्न छाया द्वारा प्रतिबिम्बित होकर अनिष्ट का निवारक तथा कल्याणकारी होते हैं।

रत्नों को धारण करने हेतु ग्रहों के साथ–साथ रत्न को कौन–सी धातु के साथ प्रयोग किया जाये इस पर विशेष ध्यान रखना चाहिये, क्योंकि रत्नों के समान ही धातु भी ग्रहों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जैसे सूर्य मंगल ग्रह की धातु स्वर्ण चन्द्रमा, बृहस्पति और शुक्र की धातु चाँदी, बुध की स्वर्ण व कांसा, शनि की धातु लोहा, सीसा तथा राहु और केतु की धातु 'पंच धातु' है। पंच धातु का पाँच धातुओं के समिश्रण से बनाया जाता है। जिसमें स्वर्ण, चाँदी, ताँबा, काँसा और लोहा को बराबर मात्रा में मिलाकर जो एक पदार्थ बनाया जाता है। वह 'पंचधातु' कहलाता है। रत्नों को धारण करते समय यह सदैव ध्यान रखना चाहिये कि रत्नों को धारण किया जा रहा है वे परस्पर मित्र है अथवा शत्रु। दो विरोधी अर्थात् शत्रु प्रवृत्ति के रत्न लाभ के स्थान पर हानि ही करेगा। यदि रत्न मित्र है तब दोनों ही मिलकर पहनने वाले को लाभ पहुँचायेगे। आगे रत्नों के मित्र व शत्रु रत्नों का विवरण दिया जा रहा है।

मित्र व शत्रु रत्न परिचय

	रत्न	मित्र	शत्रु
1.	हीरा	पन्ना, नीलम	माणिक्य, मोती
2.	मोती	माणिक्य, पन्ना	हीरा, मूँगा
3.	मूँगा	माणिक्य, मोती, पुखराज	पन्ना
4.	पन्ना	माणिक्य, हीरा	मोती
5.	नीलम	पन्ना, हीरा	माणिक्य, मोती, मूँगा
6.	माणिक्य	मोती, मूँगा, पुखराज	हीरा, नीलम
7.	गोमेद	पन्ना, नीलम, हीरा	माणिक्य, मोती
8.	लहसुनिया	पन्ना, नीलम, हीरा	माणिक्य, मोती

यह तो स्पष्ट हो चुका है कि रत्न मनुष्य के जीवन पर प्रभाव डालते हैं किन्तु रत्न धारण में ग्रह–नक्षत्रों की दिशा व दिशा के साथ–साथ यह भी ध्यान रखना चाहिये कि यदि एक से अधिक रत्नों को धारण करना हो तो केवल मित्र रत्नों को ही एक साथ धारण करना चाहिय। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि अर्थात् कुप्रभाव ही पडेगा।

24.6 सारांश

रत्नों का मानव जीवन से अटूट सम्बन्ध रहा है। ऋग्वेद काल से आज तक मानव का आकर्षण रत्नों के प्रति दृष्टिगोचर होता रहा है। रत्न ग्रह जनित दोषों के कारण उत्पन्न रोगों को नष्ट करने में सहायक होते हैं। आयुर्वेद में वैद्यों के द्वारा रत्न भस्म तैयार करने व रोग मुक्ति हेतु प्रयोग करने का भी विवरण प्राप्त होता है। रत्न सम्पूर्ण ब्राह्मण के सात रंगों का प्रत्यक्ष रूप है। ये सात रंग या ज्योतियाँ रत्नों के साथ पंचमहाभूत अर्थात् पृथिवी, वायु, तेज, जल और आकाश तथा उनकी सूक्ष्म प्रकृति

अथवा विषय (घ्राण, स्पर्श, रूप, रस और शब्द) से जुड़े हैं। रत्न ग्रहों से आ रही रश्मियों को ग्रहण कर शरीर में प्रवेश करती है और धारण रत्न तथा धारक की ग्रह दिशा दशा के अनुरूप जीवन पर प्रभाव डालती है। अतः रत्न धारण किसी निपुण ज्योतिषी की सलाह से ही धारण करना चाहिए।

रत्न विभिन्न ग्रहों के प्रतीक माने जाते हैं। ज्योतिष शास्त्रानुसार रोग उत्पत्ति का कारण ग्रहदृष्टि मानी जाती है। जिसके शमन के लिए ग्रह के अनुसार रत्न का विधान वर्णित है। नव रत्नों की भस्म आयुष्य, बलवर्धक, मेधावर्धक एवं रसायन होती है। परन्तु इनमें विशिष्टि रूप से माणिक्य की भस्म उत्तम वात–पित्त दोष हरण करने वाले एवं कफ नाशक होते हुए क्षयरोग में लाभदायक है। नीलम की भस्म त्रिदोष नाशक है। पुष्पराग की भस्म कफ–वातशामक एवं पाचक होते हुए शरीरगत विष प्रभाव को नष्ट करने में विशेष उपयोगी, वैदूर्य की भस्म शीतवीर्य होने से रक्तपित्त नाशक, नेत्र रोग एवं पित्त विकार में लाभप्रद है। मुक्ता की भस्म क्षयरोग तथा श्वास सम्बन्धी के शमन हेतु उपयोगी, विद्रुम की भस्म विषप्रभाव एवं जीवाणुओं के शमन में लाभकारी, हीरे की भस्म नेत्र ज्योति वर्धक होती है। अष्टाङ्गसङ्ग्रह–रत्नों को विभिन्न रोगों का नाशक तथा मनुष्य के लिए मंगलकारी कहा है–

पद्मरागमहानीलपुष्परागविदूरकाः।
मुक्तविद्रुमवज्रेन्द्रवैदूर्यस्फटिकादिकम्।।
मणिरत्नं सरं शीत कषायं स्वादुलेखनम्।
चक्षुष्यं धारणात्तु पापालक्ष्मीविषापहम्।।
धन्यमायुष्यमोजस्यं हषोत्साहकरं शिवम्। (अष्टाङ्ग–सङ्ग्रह 12/19–20)

अर्थात् माणिक्य, नीलम, पुखराज, वैदूर्य, मोती, मूँगा, हीरा, स्फटिक आदि मणियाँ रत्न है। ये सब, शीतवीर्य रस में कषाय एवं मधुर, लेखन तथा चक्षु के लिए हितकारी है। इनको धारण करने से पाप, अलक्ष्मी तथा विष का नाश होता है। ये रत्न धन, आयु, ओज, हर्ष, उल्लास को बढ़ाने वाले तथा मंगलकारी होते हैं।

24.7 उपयोगी पुस्तकें

1. रसरत्नसमुच्चय–अम्बिकादत्त शास्त्री
2. रत्न चिकित्सा– डॉ. विनयतोष भट्टाचार्य
3. आयुर्वेद प्रकाश– पं. श्रीशिवशर्मा आयुर्वेदाचार्य
4. बृहज्ज्यौत्षिसार– श्री रूपनारायण शर्मा
6. बृहत्संहिता– वराहमिहिर
7. रत्न प्रदीप– डॉ. गौरीशंकर कपूर
8. रत्न परिचय– हरिश्चन्द्र विद्यालंकार
9. रत्न और ज्योतिष– संपादक– अरुण बंसल, लेखिका– रेखा कल्पदेव
10. रत्न विज्ञान– पं. कपिल मोहन जी
11. शुक्रनीति– श्रीराजेश्वर शास्त्री द्राविड़

24.8 अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों के सत्य/असत्य में अन्तर दीजिये–

1. रत्न शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ऋग्वेद में मिलता है। सत्य/असत्य
2. मोती एक खनिज रत्न है। सत्य/असत्य
3. रत्नों का सम्बन्ध इन्द्रधनुष के रंगों से हैं। सत्य/असत्य
4. हीरा एक जैविक रत्न है। सत्य/असत्य
5. माणिक्य दो प्रकार का होते हैं। सत्य/असत्य
6. मोती सीपी से प्राप्त होता है। सत्य/असत्य
7. रत्नों का प्रयोग भस्म के रूप में भी होता है। सत्य/असत्य
8. नव रत्नों का सम्बन्ध ग्रहों से है। सत्य/असत्य
9. रत्न धारण करने के लिये ग्रहों की स्थिति जानना आवश्यक है। सत्य/असत्य
10. पन्ना और नीलम रत्न हीरे का शत्रु रत्न है। सत्य/असत्य

प्र.2 रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. मूँगा एक .... रत्न है।
2. हीरा पुरुषजाति, स्त्रीजाति एवं .... भेद से तीन प्रकार का होता है।
3. वैदूर्य एक .... रत्न है।
4. प्रवाल का रंग .... होता है।
5. शुक्र नीति के अनुसार नवरत्नों .... को कहा जाता है।

प्र.3 एक अथवा दो शब्द में उत्तर दीजिए–

1. महारत्नों की संख्या रसरत्नसमुच्चय के अनुसार कितनी है?
2. सूर्य का सम्बन्ध किस रत्न से है?
3. गोमेद का शत्रु रत्न कौन–कौन से है?
4. मोती का प्रिय ग्रह कौन है?
5. जैविक रत्न कौन–कौन से है?

प्र.4 बहुविकल्पीय प्रश्न–

1. शुक्रनीति में महारत्नों की संख्या कही गई है।

(क) छः (ख) दस (ग) आठ (घ) नौ

2. रत्नों का परिचय रसरत्नसमुच्चय के किस अध्याय में मिलता है?

(क) प्रथम (ख) द्वितीय (ग) चतुर्थ (घ) पंचम

3. इनमें से कौन–सा रत्न खनिज रत्न नहीं है?

(क) हीरा (ख) नीलम (ग) वैदूर्य (घ) मोती

4. चन्द्रमा ग्रह को प्रबल करने हेतु कौन–सा रत्न धारण करना चाहिये।

(क) हीरा (ख) मोती (ग) माणिक (घ) गोमेद

5. 'राहु' ग्रह के लिये कौन–सा रत्न धारण करना चाहिये?

(क) गोमेद (ख) पन्ना (ग) माणिक्य (घ) मोती

प्र.5 अभ्यास प्रश्न/बोध प्रश्न

प्र.1 रत्नों की उत्पत्ति व इतिहास बताइये।

प्र.2 नवरत्नों का परिचय व स्वरूप बताइये।

प्र.3 रत्नों का ग्रह के साथ सम्बन्ध तथा ग्रह शान्ति हेतु रत्नों के प्रयोग पर चर्चा कीजिये।

प्र.4 रत्न ज्ञान का आधार विज्ञान है? सिद्ध करें।

24.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

सत्य/असत्य प्रश्नों के उत्तर–

1. सत्य
2. असत्य
3. सत्य
4. असत्य
5. सत्य
6. सत्य
7. सत्य
8. सत्य
9. सत्य
10. असत्य

रिक्त स्थान की पूर्ति–

1. जैविक
2. नपुंसक जाति
3. खनिज
4. रक्त
5. महारत्न

एक शब्दों में प्रश्नों के उत्तर

1. नौ

2. माणिक्य
3. माणिक्य और मोती
4. चन्द्र
5. मूँगा और मोती

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. घ
2. ग
3. घ
4. ख
5. क

बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर का मूल्यांकन अध्यापक स्वयं करें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY